प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
एम.ए., पीएच्.डी.
हिन्दी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्री. शम्भूनाथ रामचरण द्विवेदी ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिये **''हिन्दी उपन्यासों में चित्रित दलित-जीवन (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में)''** शीर्षक से प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किये है। मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। श्री. शम्भूनाथ रामचरण द्विवेदी के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ।

प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
शोध-निर्देशक

सातारा
दिनांक - 24-02-2003

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते हैं कि श्री. शम्भूनाथ रामचरण द्विवेदी का एम्.फिल्. (हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध **"हिन्दी उपन्यासों में चित्रित दलित-जीवन (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में)"** परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
हिन्दी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

L. B. S. COLLEGE SATARA

प्राचार्य आर. जी. चव्हाण
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

प्रख्यापन

"हिन्दी उपन्यासों में चित्रित दलित-जीवन (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में)" यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्. के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिये प्रस्तुत नहीं की गई है।

शम्भूनाथ

(शम्भूनाथ रा. द्विवेदी)

सातारा

दिनांक 24-02-2003

प्राक्कथन

आज साहित्य का स्तर व्यापक हो रहा है। गांवों, कस्बो, गलियों, गंदी बस्तियों का जीवन सत्य साहित्य का विषय बना है। उपन्यास मानवी जीवन का दर्पण है। आज यह विधा विवेचन, विश्लेषण, संशोधन का विषय रही है। आज विश्वसाहित्य में उपन्यास विधा लोकप्रिय रही है। भाव और शिल्प की दृष्टि से यह विधा सम्पन्न रही है। स्वातंत्र्योत्तर काल के उपन्यास में मानव जीवन, समाज जीवन, नारी जीवन की व्यथा-कथा, विवशता, शोषण, नारी जीवन, सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थिति में होने वाला परिवर्तन आदि सभी बातों का यथार्थ रूप में चित्रण होने लगा। इसी कारण उपन्यास को "मानवी जीवन का महाकाव्य" कहा जाता है। सामाजिक प्रतिबद्धता, साहित्य की विशेष प्रवृत्ति रही है। सजग साहित्यकार वही है जो समकालीन जीवन का, आकांक्षाओं का चित्रण करता है। हिन्दी उपन्यास विधा इसी कारण समृद्ध एवं सशक्त बनी है। आज के उपन्यासों को समकालीन इतिहास भी कहा गया है।

उपन्यास एक विचारधारा, भाव-भावना एवं संवेदना का वाहक ही नहीं बल्कि चरित्र का आख्यान भी है। जीवन की व्यथा-कथा और विविधता का अंकन करने वाली यह साहित्य रचना युग परिवर्तन के साथ परिवर्तित हो रही है। समाज जीवन के मूल्यों में संक्रमण हो रहा है, विचारधाराओं में बदलाव आ रहा है, मानसिक प्रवृत्तियों में टूटन-शीलता रही है तो कई नये मूल्य एवं प्रवृत्तियाँ पनप रही हैं। परिणामत: साहित्य तथा उपन्यास का रूप बदलता जा रहा है। विकास के साथ-ही-साथ विविधता और परिपूर्णता उनकी विशेषता बनी है। स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज जीवन में होने वाले परिवर्तन का सशक्त अंकन करने में उपन्यास सफल रहा है। ज्ञान देने वाला, मनोरंजन करने वाला उपन्यास आज शोषित, पीड़ित, दलित, अबला की आवाज बना है। किसान, मजदूर, गणिका, नृत्यिका, विधवा, बंधुआ मजदूर और संघर्ष रत दलित की आशा-आकांक्षाओं को व्यक्त करने वाला उपन्यास समाज जीवन की तस्वीर बना है। झुग्गी, झोपड़ी, बस्ती, मुहल्ला, गांव, नगर, महानगर नें स्थित दलितों की कथा बताने वाला साहित्य आज चिंतन का विषय रहा है।

प्रेमचंद के कारण हिन्दी उपन्यास को नई दिशा प्राप्त हो गई। उन्होंने उपेक्षित व्यक्ति, नारी या दलित आदि को साहित्य का विषय बनाकर नई-नई रचनाओं का सृजन किया। उन्हें 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है। निराला, भगवतीचरण वर्मा, जगदीशचंद्र, मदन दीक्षित, चंद्रमोहन प्रधान, नरेन्द्र शर्मा, मधुकर सिंह, शैलेश मटियाणी, भगवती प्रसाद शुक्ल, अमृतलाल नागर आदि जैसे अनेक रचनाकारों ने अपनी कलम से दलितों का जीवन चित्रित किया है। आज के दलितों में अस्मिता का अभाव, अधिकार की रक्षा और अस्तित्व का

भाव बढ़ने लगा है। जिसके कारण दलितों में विद्रोह की भावना पनपने लगी है। चेतित, जागृत दलित अपने संगठन के बल पर अपने अधिकारों की मांग कर रहा है और उसकी प्राप्ति के लिये संघर्ष भी कर रहा है। इसी कारण आज दलित साहित्य एक संशोधन का विषय रहा है।

मराठी साहित्य में दलित साहित्य एक स्वतंत्र विधा के रूप में रहा है, परंतु हिन्दी साहित्य में उसका प्रारंभिक रूप रहा है। दलितों का जीवन, उनका अनुभव, भोगा हुआ यथार्थ, उनकी जीवन की समस्या, उनका होने वाला धर्म परिवर्तन, समाज में उत्पन्न होने वाली नई जाति-व्यवस्था आदि सभी का चित्रण दलित साहित्य में हो रहा है। पढ़ा-लिखा दलित अपने भाई से दूर जा रहा है। इस परिवर्तित मानसिकता को भी उपन्यासकारों ने चित्रित किया है। आज शिक्षा व्यवस्था, सरकारी विकास योजना, समाजसेवकों का कार्य आदि के कारण उपेक्षित, शोषित दलित समाज संघर्ष कर रहा है। दलित समाज नवजागरण, जनजागरण के दौर से चल रहा है। सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन हो रहा है। नई सभ्यता, नई चेतना, नई संस्कृति, नई समाज रचना और व्यवस्था का चित्रण करना इस लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज जीवन में परिवर्तन होने लगा। साथ-ही-साथ साहित्य में भी नई प्रवृत्तियों का आगमन हुआ। महात्मा गांधी, फुले, शाहू, अम्बेडकर आदि जैसे समाज सुधारकों के कार्य के परिणामस्वरूप समाज में परिवर्तन हुआ। परिणामत: साहित्य के स्वरूप में भी बदलाव आ गया। अम्बेडकर जी के 'शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो' इस नारे से दलित समाज जाग उठा। कालाराम मंदिर प्रवेश, महाड़ सत्याग्रह और बौद्ध धर्म का स्वीकार आदि घटना से दलित जीवन प्रभावित हुआ। दलित समाज में नई चेतना पैदा हो गई। हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में इसे चित्रित किया है। परिवर्तित दलित जीवन और उनके जीवन में उत्पन्न चेतना को चित्रित करना प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

आज का साहित्य दलित चेतना का पक्षधर रहा है। दलित साहित्य आज के दलित मन का आलेख, दस्तावेज और प्रतीक बना है। आज दलितों में शिक्षा प्रसार और चेतना के कारण जागृति हो रही है। आज जातीयता की भावना कम हो रही है। भारतीय समाज व्यवस्था में धर्म, धर्मग्रंथ, धर्मस्थल, और धर्मगुरू का विशेष महत्व रहा है। धर्मगुरू समाज व्यवस्था के कर्ता बने हैं। भारतीय समाज में अस्पृश्यता और जातीय भेदभाव रहा है। परंतु संत, महंत, भक्त, सुधारक, समाज सेवक और साहित्यकारों ने इसका विरोध करके नई समाज की नींव डालने का कार्य किया। समय-समय पर इन लोगों में जातीयता का डटकर मुकाबला करके अस्पृश्यता की जड़ें कमजोर की। परिणामत: समाज का रूप बदलता रहा।

साहित्यकारों ने लोकजीवन और लोकसंस्कृति को साहित्य में स्थान देकर जनवादी साहित्य का निर्माण किया। जनवादी साहित्य के कारण किसान, मजदूर, निम्नवर्ग का जीवन चित्रित होने लगा। प्राचीन काल से शोषित, दास, दलित जीवन चित्रित होने लगा। दलित वह है जिसे पनपने नहीं दिया गया। अर्थात मनुष्य के नाते जीवन जीने का जिनका हक छीन लिया गया उसे दलित कहा जाता है। शूद्र, अस्पृश्य, आदिवासी, बौद्ध, सर्वहारी जनता, भूमिहीन मजदूर, भटकनेवाली जाति-जमाति आदि सभी दलित संज्ञा के अंतर्गत आते हैं। दलित को अस्पृश्य, जंगली, चांडाल भी कहा गया है। ऐसे शोषित मानवी जीवन की कहानी दलित साहित्य है। दलित साहित्य को समानान्तर साहित्य, क्रांतिकारी साहित्य अथवा सर्वहारा वर्ग का साहित्य आदि विभिन्न नामों से सम्बोधित किया जाता है। दलित संघर्ष ने ही साहित्य को नई दिशा दे दी। दलित संघर्ष, दलितों का संगठन, दलितों का विद्रोह आदि को स्पष्ट करना प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

आजादी के बाद दलितोद्धार, दलित जागरण, दलित संगठन, दलित मुक्ति, समता और आरक्षण आदि रूप में सामाजिक कार्य शुरू हुआ। दलित जीवन को साहित्य में स्थान देकर उनकी व्यथा को वाणी देने का कार्य प्रारंभ हुआ। शिक्षित दलितों में जो विद्रोह है उसे चेतना कहा गया। समाजजीवन की बदलती दिशाओं और गतिविधियों का प्रतिबिम्ब साहित्य में चित्रित होने लगा। गतिशील जीवन का वर्णन, जनवर्ग की सभ्यता का अंकन, विद्रोह एवं क्रांति का प्रकटीकरण, प्रगतिवादी विचारों एवं घटनाओं का मूल्यांकन साहित्य में होने लगा। समाज जीवन की नई व्याख्या करने वाले दलित साहित्य को स्पष्ट करना प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है। आज भौतिक विकास के कारण समाज जीवन में परिवर्तन हो रहा है। उस परिवर्तन से दलित समाज कितना प्रभावित है? दलितों में शैक्षिक प्रसार, आर्थिक विकास कितना हुआ ? उसे स्पष्ट करना प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

आजादी के साथ-साथ समाजव्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन होने लगा। शोषण रहित समाज की निर्मिती और मानव सत्ता की स्थापना करना, इस उद्देश्य को लेकर समाज सुधारकों ने कार्य किया। इससे एक प्रकार से साहित्य में नई क्रांति शुरू हो गई तो समाज में नये आन्दोलन का प्रारंभ हुआ अर्थात दलित साहित्य सामाजिक क्रांति का प्रतीक है। सामाजिक समानता की स्थापना करना दलित साहित्य का लक्ष्य है। इस कार्य में दलित साहित्य कितना सफल रहा है? उसे स्पष्ट करना प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध का उद्देश्य रहा है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के लिए डॉ.भगवती प्रसाद शुक्ल का 'खारे जल का गांव', जगदीश चंद्र का 'धरती धन न अपना', मदन दीक्षित का 'मोरी की ईंट', चंद्रमोहन प्रधान का 'एकलव्य' और रामधारी सिंह

दिवाकर जी का 'आग-पानी आकाश' आदि उपन्यासों का आधार लिया है। इन उपन्यासों के आधार पर हिन्दी उपन्यासों में चित्रित दलित-जीवन,उनकी समस्या, उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति, उनमें उत्पन्न चेतना और जागृति, उनके परिवर्तित जीवन आदि पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को छह अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय - ''हिन्दी साहित्य और दलित जीवन''। इस अध्याय में साहित्य और समाज, साहित्य और समाजजीवन का सम्बन्ध, समाज की निर्मिती आदि को स्पष्ट करते हुए दलित की व्याख्या, दलित शब्द का व्यापक और संकुचित अर्थ, स्पष्ट किया है। दलित साहित्य को परिभाषित करने का प्रयत्न किया है। दलितों का जीवन, उनकी आज की स्थिति, समाज सुधारकों का कार्य, फुले, शाहू, अम्बेडकर, गांधी आदि का योगदान स्पष्ट करते हुए दलितोद्धार को चित्रित किया है। दलितों के विकास में आनेवाली रूकावटों (अडसर) को चित्रित किया है। साथ-ही-साथ दलित चेतना का निर्माण और उसका महत्व स्पष्ट करते हुए दलित संगठन और दलित शिक्षा पर बल दिया है।

द्वितीय अध्याय - ''आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु'' (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में) इस अध्याय में उपन्यास के तत्व, कथावस्तु का महत्व, उसके प्रकार आदि का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए कथावस्तु की अनिवार्यता एवं महत्व स्पष्ट किया है। आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु का शैल्पिक दृष्टि से विवेचन किया है। 'खारे जल का गांव', 'धरती धन न अपना', 'मोरी की ईंट', 'एकलव्य', 'आग-पानी आकाश' आदि उपन्यासों की कथावस्तु देकर उसमें चित्रित जीवन को स्पष्ट किया है।

तृतीय अध्याय - ''हिन्दी उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन'' (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में) इस अध्याय में दलितों के जीवन से संबंधित बातों पर प्रकाश डाला है। जिसमें - उनमें स्थित अंधश्रद्धा, उनके उत्सव, पर्व, तीज-त्यौहार संबंधी मान्यता, रूढ़ि-परंपरा और प्रथा पर विश्वास को स्पष्ट करते हुए उनमें प्रचलित विवाह संस्कार और मृतक संस्कार की विधि पर प्रकाश डाला है। उनकी देवी-देवताओं संबंधी मान्यता को स्पष्ट करते हुए उनमें प्रचलित बलिप्रथा को भी स्पष्ट किया है। साथ-ही-साथ उनकी आर्थिक स्थिति एवं व्यवसाय, उनके रहन-सहन व निवास-व्यवस्था तथा शिक्षा संबंधी स्थिति को दर्शाने का प्रयत्न किया है। दलितों के जीवन में होने वाले जातीय भेदाभेद एवं जाति पंचायत और संगठन तथा समूह भावना को स्पष्ट किया है। दलितों में प्रचलित लोककथा और लोकगीतों का उल्लेख करते हुए उनकी राजनीतिक स्थिति और उससे होने वाले परिवर्तन को स्पष्ट किया है।

चतुर्थ अध्याय - ''हिन्दी उपन्यासों में चित्रित दलित-जीवन की समस्याएँ'' (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में) इसके अंतर्गत साहित्य और समाज का सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए दलितों की समस्या पर प्रकाश डाला है। इसके अंतर्गत अंधविश्वास की समस्या, भूत-प्रेत, चुडैल-डायन संबंधी अंधविश्वास, मंत्र-तंत्र-झाड़-फूँक-जादू-टोना संबंधी अंधविश्वास, शुभ-अशुभ-शकुन-अपशकुन, पाप-पुण्य संबंधी अंधविश्वास, शोषण की समस्या के अंतर्गत जमींदारों द्वारा होने वाला शोषण, धार्मिक व्यक्तिं द्वारा होने वाला शोषण, सरकारी अफसरों द्वारा होने वाला शोषण, पुलिस द्वारा होने वाला शोषण और नारी शोषण आदि पर विचार किया है। जातीय भेदाभेद की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, अशिक्षा की समस्या, अवैध यौन संबंधों की समस्या, धर्म परिवर्तन की समस्या, नशापान की समस्या, आदि समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है। साथ-ही-साथ अर्थभाव एवं दरिद्रता की समस्या, भौतिक सुख-सुविधाओं के अभाव की समस्या, बेरोजगारी की समस्या आदि गौण समस्याओं पर यत्र-तत्र उल्लेख किया है। दलितों का जीवन समस्याओं की गाथा है। उसे स्पष्ट करते हुए सुलझाने के उपाय भी स्पष्ट किये हैं।

पंचम अध्याय - ''हिन्दी उपन्यासों में दलित चेतना'' (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में) इस अध्याय में चेतना का अर्थ, चेतना का निर्माण, दलितों में चेतना निर्मिति के कारण, दलितोद्धार एवं दलित जागरण का कार्य आदि को स्पष्ट करते हुए दलित चेतना की आवश्यकता पर प्रकाश डाला है। साथ-ही-साथ आलोच्य उपन्यासों में चित्रित दलित चेतना का स्वरूप स्पष्ट किया है।

षष्टम् अध्याय - ''उपसंहार'' में लघु-शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया हैं। दलित जीवन की विविध झाँकियाँ, उसमें होने वाला परिवर्तन, उत्पन्न होने वाली चेतना, आदि पर विचार किया है।

अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची लगायी है।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डॉ. बी. डी. सगरे के निर्देशन में शोध कार्य करने का अवसर मिला। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा के कारण यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका। श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. बी. डी. सगरे जी ने व्यस्त क्षणों में अपना अमूल्य समय देकर बहुमूल्य निर्देशों के द्वारा हिन्दी उपन्यास के अध्ययन में मुझे उत्साह और प्रेरणा दी। जिसके फलस्वरूप यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण हो सका। उनके प्रति शाब्दिक आभार मेरे हृदय में स्थित कृतज्ञपूर्ण भावों को अभिव्यक्त करने में असमर्थ हैं।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राचार्य आर. जी. चव्हाण, डॉ. अर्जुन चव्हाण (कोल्हापुर), डॉ.पी.एस. पाटील (कोल्हापुर), डॉ. वाय. बी. धुमाळ (कराड), डॉ. सुरेश गायकवाड, प्रा.जयवंत जाधव, डॉ.शिवाजी जाधव, प्रा.पांडुरंग सातपुते, प्रा.दिलीप यादव, आदि के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे समय-समय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन किया।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के कार्य में लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री.कुंभार व उनके सभी सहकारी, शिवाजी महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री.बी.एस.गायकवाड व उनके सभी सहकारी, कला-वाणिज्य महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री.लालासाहेब पाटील व उनके सभी सहकारी तथा शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल व उनके सभी सहकारी और श्री.ज्ञानसिंह (दिल्ली) का मैं विशेष ऋणी हूँ जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में मेरी अत्यन्त तत्परता से सहायता की।

मेरे शोध कार्य में मुझे सदा प्रेरणा देने वाले तथा उत्साह बढ़ाने वाले मेरे विभाग (भारत संचार निगम लिमिटेड, सातारा) के महाप्रबंधक श्री.अशोक वीरजी के साथ अधिकारी वर्गों में श्री.सुनीलकुमार, श्री.विपुल अग्रवाल, श्री.रजनीकांत दास, श्री.रामकृष्ण इंगळे, श्री.शिवाप्पा मेंडिगेरी, श्री.काशिव, श्री.ओसवाल, श्री.रामकृतसिंह, श्री.ओंकार पाटील, श्री.अरूण जोशी, श्री.नंदकुमार कोळेकर, श्री.मुल्ला, श्री.चंद्रकांत सावंत, श्री.गोविंद कोष्टी, श्री.सुरेश पाटील, श्री.मनोहर माने, श्री.प्रदीप मंत्री, श्री.सी.पी.देशपांडे, श्री.शांताराम बालगुडे, श्री.रामदास जाधव. श्री.अनिल लष्करे, श्री.विलास माने, श्री. श्रुति सौरभ, श्री.कोटस्थाने,श्रीकाटकर, श्री.अशोक नलावडे, श्री.बिभीषण माने, श्री.नारायण पाटील आदि सहित कार्यालय के सभी सहकारी तथा मित्र वर्ग के प्रति ऋणी हूँ, जिनकी मुझे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से विशेष मदत मिलती रहती है।

मेरे शोध कार्य में सदा प्रेरणा देने वाले मेरे नजदीकी मित्रों तथा पारिवारिक डॉ. साईनाथ जोशी,डॉ.अनिल पंडित, डॉ.सत्यनारायण सिंह, श्री.नारायण धनवडे, श्री.दिपक भोसले, श्री. वली महंमद कच्छी, श्री.वसंत जोशी, श्री.बाळू ताटे, श्री.अनिल त्रिपाठी, श्री. लल्लन ओझा का मैं ऋणी हूँ जिनकी हरपल मुझे मदत मिलती रहती है।

मेरे शोध कार्य में प्रेरणा देने वाले मेरे परमपूज्य पिताजी श्री. रामचरण द्विवेदी, माताजी सौभाग्यवती धनपत्ती द्विवेदी, बड़े भाई श्री.देवनारायण द्विवेदी, श्री.रामनारायण द्विवेदी, रामकृपाल द्विवेदी, डॉ.उदयशंकर द्विवेदी, शोभनाथ द्विवेदी, के साथ परिवार के छोटे भाई अशोककुमार द्विवेदी, यज्ञनारायण द्विवेदी, सत्यनारायण द्विवेदी तथा मेरी बहिने श्रीमती राजकुमारी व श्रीमती बृजकुमारी और परिवार के सभी लोगों के आशीर्वाद व

शुभेच्छा तथा सहयोग पर प्रस्तुत शोध कार्य सम्पन्न हुआ। मैं अपने शोध की कार्य सम्पन्नता के लिए अपनी पत्नी सौभाग्यवती मालती द्विवेदी तथा मेरी लड़की कु.पूजा द्विवेदी के प्रति विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ जिनकी तपस्या, प्रेरणा, त्याग, सहकार्य इत्यादि के कारण यह शोध-कार्य पूर्ण हो सका है। साथ-ही-साथ मैं मेरे रिस्तेदार व श्रद्धेय श्री.लक्ष्मीनारायण पांडेय (गुरूजी) एवं सभी रिश्तेदारों व परिचितों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनका सहयोग तथा आशीर्वाद और प्यार मुझ पर सदैव रहता है। इसके साथ ही मैं हमारे शोध-निर्देशक डॉ.सगरे जी की पत्नी सौ.अरूणा भरत सगरे, पुत्री कु.प्रियांका सगरे तथा पुत्र चि.प्रथमेश सगरे के प्रति विशेष आभारी हूँ जिनसे मुझे पारिवारिक स्नेह सहकार्य मिलता है।

अंत में इस लघु-शोध-प्रबंध को अत्यन्त कम समय में बड़ी कुशलता के साथ टंकित करने वाले मे.रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री.मुकुंद ढवळे जी तथा उनके सहकारी श्री.राजू कुलकर्णी जी का कृतज्ञ हूँ।

शम्भूनाथ
(शम्भूनाथ द्विवेदी)

सातारा
दिनांक - 24.02.2003

अनुक्रमणिका

		नंबर
	प्रमाणपत्र	प्रथम
	अनुशंसा	द्वितीय
	प्रख्यापन	तृतीय
	प्राक्कथन	चतुर्थ
	अनुक्रमणिका	एकादश
प्रथम अध्याय :-	**''हिन्दी साहित्य और दलित जीवन''** (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में)	**1 - 40**
द्वितीय अध्याय :-	**''आलोच्य उपन्यासों की कथावस्तु''** (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में)	**41 - 118**
तृतीय अध्याय :-	**''हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित-जीवन''** (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में)	**119 - 161**
चतुर्थ अध्याय :-	**''हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित-जीवन की समस्याएं''** (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में)	**162 - 210**
पंचम अध्याय :-	**''हिन्दी उपन्यासों में चित्रित दलित-चेतना''** (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में)	**211 - 237**
षष्ठम अध्याय :-	**'उपसंहार'** (खारे जल का गांव, धरती धन न अपना, मोरी की ईंट, एकलव्य, आग-पानी आकाश के संदर्भ में)	**238 - 244**
	संदर्भ ग्रंथ सूची	**245 - 248**